Vol 5 Issue 12 June 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | June - 2016

Golden Research Thoughts

''पारिवारिक मूल्य एवं लिंग असमानता''

डॉ. सुषमा नयाल
असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग , एस.एम.जे.एन.(पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार .

सारांश :–
भारत एक पितृसत्तात्मक समाज रहा है एवं है, जहाँ महिलाओं को सदैव ही विकास क्रम में पीछे रखा गया है। बहुत सूक्ष्म एवं वृहत्तम् रूप से यह स्पष्ट देखा जा सकता है, परिवार जो सबसे बड़ी सामाजिक संस्था के रूप में भारतीय समाज की विशेषता है, पारिवारिक संस्था के मूल्यों ने परिवार के लिए उत्तराधिकारी की इच्छा व आवश्यकता सदैव की है, वह उत्तराधिकारी है पुत्र। पुत्र से वंश चलाने, वंश बढ़ाने, पित्रों को ऋण से उऋण करने, जीवन मृत्यु के विधानों, कर्मकाण्ड़ों का दायित्व एवं अभिव्यक्ति करने के अधिकार एवं सभी दायित्व पुत्र को प्राप्त रहे हैं। अतः पुत्र ही परिवार संस्थाओं का तारणहार माना गया है जिस कारण पुत्र होने पर पुत्र के प्रति माता-पिता एवं समाज द्वारा अति आनन्दित होना स्वाभाविक मूल्य माना गया, किन्तु इस स्वाभाविकता से लगने वाले मूल्य के मध्य जो अमानवीयता घटित होती है, वह है पुत्री को पुत्र का विलोम माना जाना। यह माना जाता रहा है कि पुत्रों जैसी विशेषता, महत्वता पुत्री में सम्भव नहीं हैं एवं यह सभी मूल्य जो कि पारिवारिक स्तर पर पुत्र को महत्वपूर्ण मानते हुए ***'लिंग असमानता'*** की कुप्रथा को प्रारम्भिक स्तर पर जन्म देते हैं। पुत्री को जन्म देने की अमानवीय मनोवृत्ति ही पुत्री जन्म की अनिच्छा को उत्पन्न करता है। पारिवारिक शिक्षाओं में यदि इस प्रकार की पितृसत्तात्मक एवं महिला की गौणता का समाजीकरण होता रहा तो लिंग असमानता के कुचक्र से समाज नहीं उभर पायेगा।

प्रस्तावना :

समाज में परिवार पितृसत्तात्मक है एवं '***'परिवार समाज की केन्द्रीय संस्था है, जहाँ समाज के लिए विकास की शाखायें जन्म लेती हैं।''***[1] विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने का माध्यम परिवार ही है। परिवार के स्वरूप का श्रेय अर्थव्यवस्था को माना गया है, क्योंकि औद्योगीकरण में परिवार एकाकी रूप लेते हैं। वहीं कृषि समाज में संयुक्त परिवारय निश्चय ही यह श्रम विभाजन का परिणाम है। परिवार का स्वरूप जो भी हो ऐतिहासिक व वर्तमान रू॰ से पुरुष ही मुखिया माना गया है एवं जिसमें सत्ता, ताकत व परम्पराओं को असमान रूप से विभाजित किया गया है, जिसमें महिला को अधिकारों व स्वतन्त्रता के केन्द्रों से दूर रखा गया। फलतः पितृसत्ता में स्त्री के रूप यथा माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका आदि पितृसत्ता की असमान नीतियों, व्यवहार, मूल्यों का शिकार हुई। उसे बिना वैकल्पिकता के यह भूमिकायें निभानी पड़ी, क्योंकि समाज में भी मूल्यों को निभाना न सिर्फ उसका कर्तव्य माना गया, वरन् मूल्य निभाना स्त्री होने का आधार भी रखा गया, जिसके पीछे कई प्रथा, परम्परा, मूल्य, आचार एवं नियमों की श्रृंखला का पालन/व्यवहार करना स्त्री का धार्मिक मूल्य रहा है।

इन पारिवारिक मूल्यों में लिंग असमानता की स्पष्टता ने भारतीय समाज का मनोविज्ञान भी तय किया। मनोविज्ञान के अनुसार इच्छायें ही व्यक्ति की क्रियाओं को तय करती हैं। अतः जब पारिवारिक मूल्यों के सन्दर्भ में यह तथ्य देखें तो स्पष्ट है कि भारतीय समाज का समाजशास्त्र, भारतीय समाज के मनोविज्ञान का निर्धारक है, क्योंकि पारिवारिक मूल्यों में लड़की का जन्म होना

जब गौण/संकीर्ण हो तथा लड़के के जन्म से इह जन्म-परजन्म, इहलोक-परलोक, मुक्ति-मोक्ष का दर्शन जुड़ा हो तो वहाँ पुत्र की इच्छा ही पुत्री की हत्याओं में रूपान्तरित होती है एवं हो रही हैं। कन्या भ्रूण हत्या इसका परिणाम है जोकि वर्तमान कानूनी आधारों के होने पर भी सामान्य घटनाओं की तरह घटित होती है, यह लिंग असमानता का ही रूप है।

लिंग असमानता :

प्रति १००० पुरुषों के पीछे महिलाओं की कुल संख्या लिंग अनुपात है तथा लिंग अनुपात की संख्या की गैरबराबरी या अन्तर होना गणितीय रुप में लिंग असमानता है। भारत में २००१ में प्रति १००० पुरुषों पर ९३३ महिलायें [२], २०११ की जनगणना में १००० पुरुषों पर ९४० महिलायें[३] हैं। बहुत स्पष्ट है कि यह गणितीय असमानता सामाजिक असमानता के रूप में प्रदर्शित हो रही है। स्पष्ट है कि भारतीय समाज जो कि *'यत्र नार्युस्तु पूज्यन्ते', एवं कितने ही गुणगान से गुजरा है वह उत्तर आधुनिकता के दौर में कितनी विरोधाभासी, मिथकीय तथ्यों में है।* United Nations Development Programme (UNDP), *जोकि मानव विकास रिपोर्ट* (HDR) *का आधार जेण्डर डेवलेपमेंट इन्डेक्स* (GDR) *को मानता है।* GDR *जेण्डर डेवलेपमंट इन्डेक्स के अन्तर्गत सर्वे किये मुख्य 188 राष्ट्रों में भारत 132वें स्थान पर है।* GDR *जोकि* HDR *से जुड़ा है, उसका निर्माण आधार निम्न चित्र द्वारा प्रदर्शित होता है।*

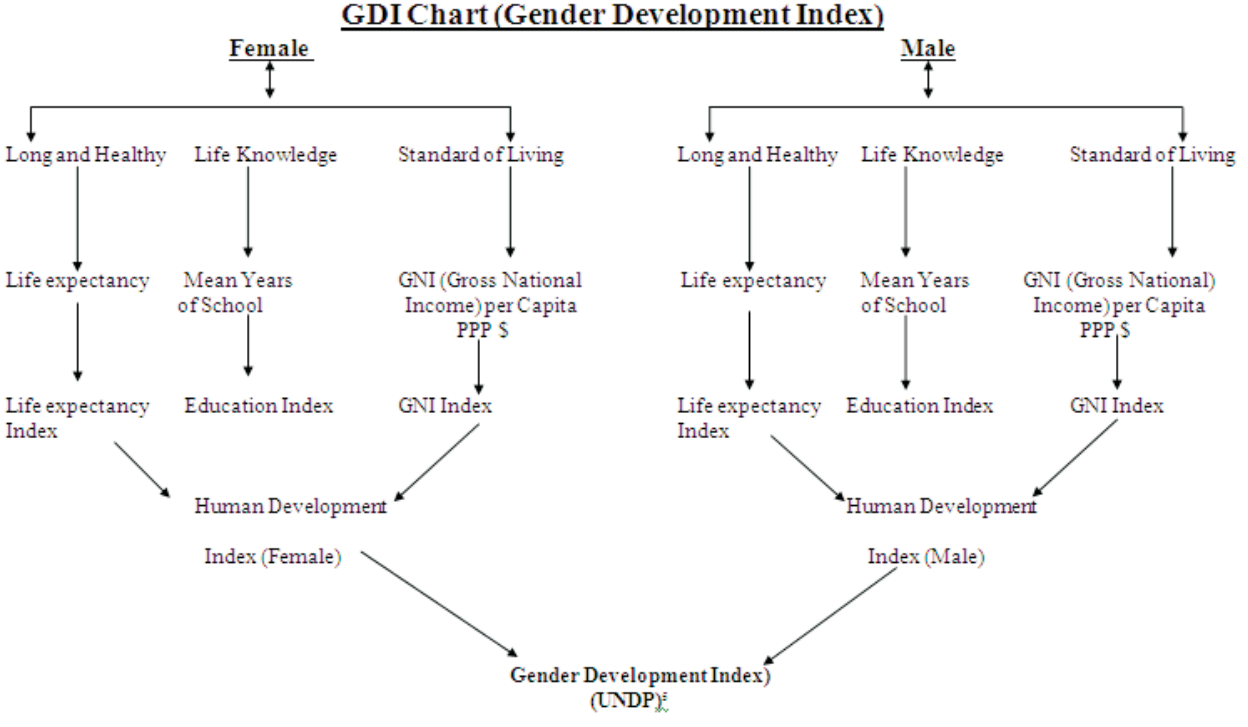

Source : www.undp.org

जी.डी.आर. में 132वाँ5 स्थान यह दर्शाता है कि महिला असमानता मात्र प्रति 1000 पुरुषों की अन्तर संख्या ही नहीं बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, हिंसा–अपराध, जीवन स्तर, अर्थव्यवस्था आदि विविध क्षेत्रों में महिला का स्थान निम्नता के स्तर पर माना गया है। आज महिला उस संकट की स्थिति में है कि वह अपने परिवार तक में सुरक्षा का अहसास करने में स्वयं को असमर्थ पाती है। *अतः यह सुरक्षा का अहसास पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक मूल्यों के दोयमता के कारण अधिक बढ़ता है क्योंकि सामाजिक संरचना के मूल्यों के सृजन का एकाधिकार पुरुषों को प्राप्त हो रहा है।*

मुख्य कारण :

लिंग असमानता के लिए पारिवारिक मूल्य एकमात्र कारण नहीं हैं। परिवार स्वतः में संस्थाओं की संस्था तो है, किन्तु परिवार को यह मूल्य धर्म से भी प्राप्त हुए हैं। धर्म का विस्तृत अर्थ कर्तव्य धारण करना है, किन्तु स्त्री के सन्दर्भ में धर्म अधिकांशतः संकुचित ही रहा है। धर्म के नियम बहुत प्रभावी हैं एवं धार्मिक नियम संस्थागत रूप से समाज को नियंत्रण करने हेतु बनाये गये, किन्तु वह परिवार द्वारा भी लागू किये गये। बाद में यही नियम पारिवारिक मूल्य बने एवं इन मूल्यों में पुत्र ही वंश का निर्धारक माना गया। पुत्र ही मोक्ष, स्वर्ग का आधार है, चूंकि वह ही पितृ मुक्ति करेगा। वहीं दूसरी ओर स्त्री को धार्मिक अधिकार नहीं दिये जाने की

बात की गयी। ***उसे हवन का अधिकार नहीं, यदि वह यह कार्य करे तो उसे नर्क में जाना होगा।***[8] हिन्दू शास्त्र मनुस्मृति में यह भी माना गया कि ***पुरुषों द्वारा स्त्री को स्वतंत्रता नहीं देनी चाहिए। इन्हें वश में रखना चाहिए। इनकी बाल्यावस्था में पिता, युवा में पति, वृद्धा में पुत्र रक्षा करता है, अतः यह कदापि स्वतंत्रता योग्य नहीं हैं। पितृसत्ता के मन में स्त्री को दबाकर नियंत्रण में रखने की प्रवृत्ति सदैव मौजूद रही है। कहीं भी वह स्त्री के अधिकारों को स्वीकार नहीं कर पाता है।***[9]

पारिवारिक मूल्यों में विवाह सम्बन्ध तय करते समय में महिला की सुन्दरता एवं असुन्दरता भी उसकी विवाह के लिए योग्यता का धारक है। धार्मिक स्मृतियों में यह स्पष्ट है कि ***जिस कन्या के बाल भूरे हों, आंखें पीली, लाल रंग की हों, बहुत बोलने वाली हो उसके साथ विवाह न करें।***[9] धर्मशास्त्र की व्यवस्था में ***स्त्रियों को जात कर्मादि क्रियायें यथा मंत्र आदि उनको ज्ञान का अधिकार नहीं***[10] दिये जाने की बात है। वेदों का अध्ययन करना ***पाप के समान बना दिया।***[11] जब महिला पारिवारिक संरचना में महिला को मुक्ति में बाधक माना जाये एवं महिला को अध्ययन-शिक्षा से दूर करने के मूल्यों को यदि उचित माना जाये, तो लिंग असमानता प्रबल होती ही है। धर्मशास्त्र में भी इन बातों को मूल्यात्मक मानकर इनका खण्डन नहीं किया गया। परिवारों ने इन्हीं मूल्यों को अपने सदस्यों को सिखाकर समाज पर लागू किया। अतः इस प्रकार के विचार प्राथमिक रुप से परिवार संस्था द्वारा संचालित व क्रियान्वित होते हैं। हालांकि परिवार स्त्री के सन्दर्भ में उसकी सुरक्षा की भी जिम्मेदारी उठाते हैं, परन्तु वर्तमान में महिला विरुद्ध हिंसा सर्वाधिक परिवार की आड़ में परिवारजनों द्वारा या नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा की जाती है। कुल में से ७० प्रतिशत[१२] भारतीय महिलाओं को घरेलू हिंसा से गुजरना पड़ता है। यह हिंसा शारीरिक, मौखिक, आर्थिक, लैंगिक के रूप में पारिवारिक संस्था में होता है। यह आँकड़े बताते हैं कि असमानता का स्तर कैसा है? यह तब हो रहा है जब उत्तर-आधुनिकता भारतीय समाज में भी अन्य राष्ट्रों की तरह विशेषता रखती हो एवं शिक्षा के दौर में ***जबकि कुल आबादी में से 74.04 साक्षर हों, जिसमें 82.14 पुरुष एवं 65.46 महिला साक्षर हों।***[13] शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ भ्रूण हत्या ***2014 में मध्य प्रदेश में सर्वाधिक की गयी तथा राजस्थान, पंजाब व हरियाणा*** ऐसे ही राज्यों में हैं जहाँ सर्वाधिक कन्या भ्रूण हत्या होती है।[१४] स्पष्ट है कि इसे पारिवारिक सदस्यों का सर्वाधिक कुसमर्थन ही होगा एवं इन कृत्यों को पाप भी नहीं माना होगा, यही लिंग असमानता की पारिवारिक नींव है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि परिवार को संस्था मानने की है। अतः परिवार मात्र प्राथमिक समूह ही नहीं; बल्कि सामाजिक संस्था भी है, जिसके नियम व मूल्य उच्चतम कोटि के होते हैं, जो व्यक्तित्व, श्रम विभाजन, आर्थिक सुरक्षा एवं सृजनात्मक समाजीकरण प्रदान करता है, परन्तु जब कुण्ठित धार्मिक मूल्य, दकियानूस कर्मकाण्डियता, एकपक्षीय अमानवीय स्त्री-पुरुष की भिन्नता की सीख दी जाये जिसमें पितृसत्तात्मकता की श्रेष्ठता एवं महिला को हासिये पर रखने की सोच परिवार प्रस्तुत करें एवं इन्हें मूल्य विरुद्ध ना समझा जाये, जिसमें समाज भी अपनी स्वीकृति प्रदान करता हो तो परिणामतः वहीं से लिंग असमानता जन्म लेती है। फलतः वही चक्र पुनः यथा-भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात, हिंसाओं के पारिवारिक व सामाजिक रूप, एसिड अटैक, वैवाहिक बलात आदि घटित होते हैं जिनका मुख्य कारण पारिवारिक समाजीकरण है, क्योंकि समाजीकरण की जड़ों का प्रमुख स्त्रोत तो परिवार ही है।

लिंग असमानता को बढ़ने देने का एक कारण स्त्री की स्वयं की भागीदारी व स्वीकृति भी रही है। ***स्त्री स्वयं भी अपनी देह को वस्तु में आंकती है, सजाती है, संवारती है, यहाँ तक कि बचपन से वृद्धा तक दूसरों की नजर में स्वयं को तोलने की आदी हो जाती है एवं देह ही उसकी कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है।***[15] अतः पारिवारिक मूल्यों में स्वयं की देह को अधिक अनुशासित करने की आवश्यकता महसूस करने के मनोविज्ञान से स्त्री प्रभावित है, जो असमानता का एक स्त्री स्तरीय कारण भी है।

पारिवारिक स्तर के उपाय :

मूल्यों का विस्तृत अर्थ तटस्थता एवं उच्च कोटि के विचारों से है जो मानवीय हों। अतः पारिवारिक स्तर पर मुखिया एवं परिवारजनों को अपनी विस्तृत रूप से अभिवृत्ति बनानी होगी, जिसे क्रियान्वित करने हेतु नयी पीढ़ी का तटस्थ समाजीकरण, उन्हें मानवीय सीख प्रदान करना होगा। न कि कन्या को उसका पंसदीदा रंग पिंक सिखाना व पुत्र को रैम्बों बनना सिखाना होना चाहिए, क्योंकि यही सीख पुत्र को पुरुषता के भाव के साथ बड़ा करती है एवं कन्या में शर्म तथा संकुचन का भाव बनाती है। यही सीख समान मानव को असमान जेण्डर में परिवर्तित करती है। दूसरा, पारिवारिक स्तर का प्रयास यह होना चाहिए कि वे धार्मिक नियम जो कुण्ठित व दकियानुसी की हद पार कर रहे हों, जैसे वंश चलाना, लड़के द्वारा ही अनिवार्य, मोक्ष का कारक पुत्र ही आदि इनको तार्किक तरीकों से देखा जाये। स्वयं के स्तर से भी स्त्री को बौद्धिक प्रयासरत होना पड़ेगा एवं पारिवारिक मूल्यों में अपने देह को अत्यन्त अनुशासित करने की आवश्यकता का विश्लेषण एक स्त्री को अपने स्तर पर करना पड़ेगा।

अतः पारिवारिक मूल्यों में स्त्री का स्थान तटस्थता से तय हो। पुत्रों की इच्छा की स्वाभाविक अभिवृत्ति ही पुत्री इच्छा को कम करके भ्रूण हत्या को जन्म देती है। इस सोच में बदलाव की आवश्यकता है। ***जिस रूढ़ि और कानून बनाने में स्त्री का कोई हक नहीं था और जिसके लिए पुरुष ही जिम्मेदार है, उस कानून व रुढ़ि के जुल्मों में स्त्री को लगातार कुचला गया है। अहिंसा के नींव पर चल गये जीवन की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरुष अपनी भविष्य की रचना का है उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।***[16] अतः स्त्री को भी स्वतः अपना भविष्य तय करने का साहस व प्रेरणा स्वयं को प्रदान करना होगा।

दहेज कुप्रथा के प्रति अस्वीकृति अपनाना एक बड़ा सार्थक विचार होगा। तभी मानवीयता के स्तर पर समाज में महिला पुरुष की समानता होगी तथा विश्व स्तरीय जी.डी.आई. लिंग अनुपात जैसे आँकड़ों में भारतीय राष्ट्र भी मिथकीय आधारों के स्थान पर प्रगति की वास्तविकता तथ्यात्मकता को उपलब्ध करेगा। इसके अतिरिक्त ***माता-पिता के रूप में जीवन सार्थकता वहीं सम्भव है जहाँ स्त्री व पुरुष एक दूसरे के साथ मिल जुलकर सहयोग दें तथा परस्पर आत्म सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करें।***[17]

निष्कर्ष :

समाज की संरचना को बनाने हेतु सभी आधारों, संस्थाओं, अंगों में परिवार महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है। इसके अभाव में समाज की संकल्पना पूरी नहीं, परन्तु पारिवारिक मुखिया का वर्चस्व पितृसत्ता के हाथों हैं जिसे बनाये रखने के लिए स्त्री के लिए मूल्यों का निर्माण तटस्थ नहीं, वरन् एकपक्षीयता के आधार पर किया गया है। मूल्यों की तटस्थता व विशेषता को ध्यान में न रखकर मूल्यों, परम्पराओं, प्रथाओं को स्त्री के लिए गठित किया, जिसमें धर्म व नैतिकता की आधारशिला से यह मूल्य स्त्री के लिए लागू किये गये जिससे संस्तरण उत्पन्न हुआ व संस्तरण में पुरुष को श्रेष्ठ व स्त्री को दलित/निम्न माना गया। धर्म, अर्थ, राजनीति, पारिवारिक व अन्य संस्थाओं में स्त्री व पुरुष दोनों के लिए दो व्यवस्थायें बनी। विशेषकर पारिवारिक मूल्यों में स्त्री की पहचान पुत्री, पत्नी, मित्र, माँ, प्रेमिका के रूप में बनी एवं उसे मानव समझकर कदापि नहीं देखा गया। यह असमान समझने की अभिवृत्ति वर्तमान में भी है। फलतः समाज में परिवारों से ही असमानता निर्गम की जाती है। फलतः स्त्री के जीवन में घरेलू-हिंसा, भ्रूण-हत्या, दहेज कुप्रथा, शोषण, दमन आदि अपराध जन्म लेते हैं। वर्तमान में भारतीय समाज में संवैधानिक-कानूनी अधिकारों के चलते स्त्री स्वयं को दैहिकता के रूप में स्वतंत्र कर पायी है, परन्तु जैसे ही वह स्वतंत्र होकर मानवीय समानता को स्पर्श करने लगी वैसे ही अपराधों की वृद्धि के रूप में नयी चुनौती सम्मुख आयी हैं। अतः पारिवारिक मूल्यों की दृष्टि में स्त्री के लिए समानता के व्यवहार एवं सोच की आवश्यकता है। इसके बिना बिना लिंग-समानता के सभी दावे कोरी व मिथकीय बहस है।

:सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

१.वी.एन.सिंह, जनमेजय सिंह, (२००४), आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ.संख्या १३६.
२.भारत की जनगणना, वर्ष २००१.
३.भारत की जनगणना, वर्ष २०११.
४.मनुस्मृति, अध्याय ५४.
५. www.undp.org.
६.मनुस्मृति, अध्याय XI/३६.
७.मनुस्मृति, अध्याय IX/२,३,६.
८.डॉ. के.एम. मालती (२०१०), स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.संख्या ६३.
९.मनुस्मृति, अध्याय III/०८.
१०.मनुस्मृति, अध्याय IX/१८.
११.डॉ. गोपा जोशी (२०११), स्त्री असमानता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ.संख्या १५३.
१२.www.wikipedia.org.
१३.https://en.m.wikipedia.org/wiki/literacy_in_india.
१४.अमर उजाला, २८ मार्च, २०१६, २० अंक ३२, देहरादून, पृ.संख्या १०.
१५प्रभा खेतान (२०१०), उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.संख्या १४१.
१६.महात्मा गांधी (१९६५), मेरे सपनों का भारत, मनोज प्रकाषन, पृ.संख्या २३६.
१७.डॉ. के.एम. मालती (२०१०), स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.संख्या ७६.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org